विश्व का अनूठा पर्व : अनुशासन, सेवा और मर्यादा का अनूठा उत्सव-मर्यादा महोत्सव

देश में एक ऐसा धार्मिक संगठन भी है जो प्रतिवर्ष अपनी मर्यादाओं का उत्सव व्यापक स्तर पर निरन्तर मनाता आ रहा है। हर वर्ष माघ शुक्ल पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी को आयोजित होने वाला यह महोत्सव अनुशासन, सेवा और मर्यादा का अनूठा उत्सव है। इस बार यह अनूठा महोत्सव तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाश्रमण के सानिध्य में डीडवाना-कुचामन जिले के छोटी खाटू कस्बे में मनाया जा रहा है। विश्व भर के संगठनों में अपनी उत्कृष्ट मर्यादा और सेवा व्यवस्था के कारण तेरापंथ धर्मसंघ की एक विशिष्ट पहचान है। तेरापंथ धर्मसंघ में 750 के करीब साधु-साध्वी और लाखों श्रावक-श्राविकाएं एक गुरु के अनुशासन, निर्देशन में चलते हैं। तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य द्वारा वि.सं. 1921 को राजस्थान के बालोतरा से प्रारंभ किया गया यह महोत्सव तेरापंथ के प्रथम आचार्य श्री भिषु द्वारा लिखित मर्यादाओं पर आधारित है। 262 वर्ष पूर्व लिखी गयी यह मर्यादाएं आज भी इस धर्मसंघ का प्राण है। इस अवसर पर धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा मर्यादा पत्र की स्थापना एवं मर्यादा पत्र का वाचन किया जाता है।

इस अनूठे पर्व के बारे में आचार्य महाश्रमण कहते हैं कि यूं तो अनेक महोत्सव होते हैं पर यह मर्यादाओं का यह महोत्सव पुरी दुनिया में विशेष महोत्सव है। मर्यादा के साथ अनुशासन, कर्तव्य की बात भी जुड़ी हुई है। अनुशासन, कर्तव्य एवं मर्यादा यह एक संगठन के लिए आवश्यक होते हैं। राष्ट्र के लिए भी यह चीजें उसकी सुरक्षा चिरंजीवीता के लिए आवश्यक है। लोकतंत्र हो या राजतंत्र प्रणाली कोई भी हो लक्ष्य सबका एक है कि प्रजा की व्यवस्था रहे, सेवा हो और प्रजा सुख शांति से रहे। मर्यादा, कर्तव्य और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता विनाश को प्राप्त होता है। अनुशासन ऐसा तत्व है जो ठीक रास्ते पर चलाने वाला होता है। अनुशासन सब को सुरक्षित रखता है। यह महोत्सव भी इन्हीं तत्वों पर आधारित है। आचार्य भिषु ने जो मर्यादाएं लिखी वह मर्यादाएं एक प्रकार की गणछत्र है। उन्होंने कहा कि आज का दिन मुख्य रूप से सेवा से जुड़ा हुआ है। हम सभी संघबद्ध साधना कर रहे हैं। धर्मसंघ में जी रहे हैं। सेवा एक ऐसा तत्व है जो एक दूसरे को जोड़ने वाला होता है। जैसे धागे से मणिया जुड़ा हुआ होता हैं तो माला बन जाती हैं उसी प्रकार सेवा वह धागा है जिसमें संगठन के सभी सदस्य जुड़े हुए हैं। हमारे धर्मसंघ में मैं अनुभव करता हूं कि सभी में सेवा की अच्छी भावना है। जहां अपेक्षा होती है वहां साधु-साध्वी कोई भी हो सेवा के लिए तैयार हो जाते हैं। ऐसे संस्कार जिस धर्मसंघ में होते हैं वह भाग्यशाली होता है। जहां पर सेवा की बात आती है वहां पर पद भी गौण हो जाता है। अग्रणी हो या कोई भी पद पर हो परंतु सेवा सबसे पहले है। वृद्ध, अस्वस्थ आदि सभी की धर्मसंघ में सेवा होती है। यह जो सेवा का संस्कार है वह पुष्ट से पुष्टतर बने ऐसा प्रयास हो। हमारे इतने बाल मुनि है यह धर्मसंघ की पौध है। इन को सिखाना, संभालना उनकी भी एक सेवा है। सभी के भीतर हमेशा सेवा की भावना रहे और जहां अपेक्षा हो वहां जाने के लिए हृदय तत्पर रहें। हम दूसरों को चित्त समाधि पहुंचाने का प्रयास करे। तेरापंथ में तीन प्रकार की सेवा के कार्य प्रमुख होते हैं। व्यवस्था सेवा, सापेक्ष सेवा और निष्काम सेवा। निर्जरा की भावना से जो सेवा होती है उसका महत्व है। जो सेवा करता है वह महान निर्जरा करता है। धर्मसंघ में सेवा को बहुत महत्व दिया गया है। अन्य व्यक्ति भी आज जब तेरापंथ में सेवा की व्यवस्था को देखते हैं कि यहां पर अल्लाम भाव से सेवा होती है तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं। संघ सब की सेवा करता है। हमारे सभी पूर्वाचार्यों ने सेवा को बहुत महत्व दिया है। दीक्षा लेते ही सेवा के संस्कार जन्म घुंटी के रूप से सभी को मिलते हैं। जहा ऐसी सेवा होती है वह संघ हमेशा यूं ही चिरंजीवी बना रहता है। इस महोत्सव के दौरान आचार्य श्री मर्यादाओं के संकल्प के साथ सेवा केंद्रों के लिए साधु-साध्वियों की नियुक्ति भी करते है जिसके अन्तर्गत धर्मसंघ में वृद्ध साधु-साध्वियों के लिए देश के विभिन्न स्थानों में सेवा केंद्र स्थापित है। सेवा कार्य के लिए साधु-साध्वियों की नियुक्ति करते है। तेरापंथ में मर्यादा महोत्सव एक महत्वपूर्ण आयोजन है, जो धर्मसंघ के अनुयायियों के लिए एक प्रमुख उत्सव है, जो उन्हें अपने धर्म और संस्कृति के बारे में लोगों को जागरूक करता है। मर्यादा महोत्सव के दौरान विभिन्न धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं, जिनमें तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिषु की शिक्षाओं और मर्यादाओं पर चर्चा की जाती है। इस अवसर पर अनुयायियों को अपने धर्म और संस्कृति के बारे में जागरूक करना और उन्हें आचार्य भिषु की शिक्षाओं और मर्यादाओं का पालन करने के लिए प्रेरित करना है। सचमुच! किसी भी संगठन द्वारा लम्बे समय से मर्यादाओं का ऐसा उत्सव विशाल महोत्सव के रूप में मनाया जाना धर्मसंघ की विशेषताओं को दर्शाता है।

-डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल, लक्ष्मी विलास, करन्ट बालाजी कॉलोनी, लाडनूं 341306 (राजस्थान) मो-9413179329

हेमू कालाणी - भारत के स्वातंत्र्य समर में समर्पित पुष्प

भारत की आजादी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 से आरंभ किया गया संग्राम अनवरत अहर्निश गतिमान रहा है। स्वातंर्त्य समर की यह जाज्वल्यमान मशाल न कभी बुझने पाई, न डिगने पाई। स्वतंत्र समर में समाज के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों ने अपना योगदान दिया है। चाहे वे किसान, मजदूर, राजनीतिक व्यक्तित्व रहे हों या फिर विद्यार्थी, शिक्षक और पत्रकार। किसी ने अपनी लेखनी से क्रांति के गीत रचे हैं तो किसी ने अपने पावन रक्त से मां भारती का तिलक किया है। देश के अस्तित्व रक्षा के लिए उम्र मायने नहीं रखती बल्कि सर्वस्व समर्पण का भाव महत्वपूर्ण होता है। गुलामी की बेड़ियां काटने के लिए किशोर वय क्रांतिकारियों ने भी राष्ट्र चेतना के गौरव अनुष्ठान में अपने जीवन की आहुति समर्पित की है। नाना साहब पेशवा की बेटी मैना हो, उत्कल का किशोर पूनम नेगी या फिर बंगाल का सिंह शावक खुदीराम बोस। किशोर बलिदानियों की इस श्रंखला में सिंध के शहीद हेमू कालाणी का नाम भारत के क्रांतिकारियों में बड़ी श्रद्धा एवं सम्मान से लिया जाता है।

हेमू कालाणी को राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति के संस्कार बचपन से ही मिले थे। हेमू का जन्म 23 मार्च, 1923 को सिंध के सक्खर नामक गांव में पिता पेसूमल कालाणी एवं माता जेठी बाई के कुल परिवार में हुआ था। वह समय भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के चरम का था तो वहीं भारतीयों के विरुद्ध अंग्रेजी शासन द्वारा किए जा रहे अमानवीय यातना एवं दमन का भी। अंग्रेजों के इस कठोर एवं निर्दयी पाशविक व्यवहार से संपूर्ण देश में क्रांति एवं विद्रोह का एक वातावरण बना हुआ था। महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, विनायक दामोदर सावरकर, लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक जन-जन के दिलों में श्रद्धा एवं शक्ति का केंद्र बन गये थे। महात्मा गांधी जब सिंध की यात्रा पर आए तो जन सैलाब सड़कों पर उतर आया। कराची में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन से भी पूरे सिंधु में स्वतंत्रता के लिए एक प्रेरक वातावरण बना। ऐसे में हेमू का बाल मन देशप्रेम एवं बलिदानी भावना से भला कैसे अप्रभावित रह सकता था, जिसे आरंभ से ही मां जेठी बाई द्वारा रात्रि में सोने से पहले महान नेताओं की कहानी सुनाई जाती रही हो। सात-आठ वर्ष का बालक अपने हमउम्र साथियों के साथ अपने हाथों में तिरंगा उठा नेतृत्व करते हुए शहर की बस्तियों में गली-गली प्रभात फेरी निकाला करता। संयोग से 23 मार्च,1931 को भगत सिंह, सुखदेव थापर एवं शिवराम राजगुरु को फांसी की सजा दिए जाने से देशभर में अंग्रेजों के खिलाफ ज्वार उमड़ा। बालक हेमू ने संकल्प लिया कि एक दिन वह भी भगत सिंह की तरह भारत माता की सेवा-साधना में अपने प्राणों कि समिधा समर्पित कर देगा। वह कपड़े से फांसी का फंदा बना साथियों के साथ भगत सिंह की फांसी का खेल खेलता। मां के यह पूछने पर कि हेमू तू ये कैसे खेल खेलता रहता है। तो वह निर्भय बालक बोलता, ÷मां ! एक दिन पूरा भारत वर्ष तुम्हारे पुत्र पर गौरव करेगा। मुझे भारत माता को अंग्रेजों से मुक्त कराना है।÷ मां गर्व से फूल बालक को सीने से लगा चूमने लगती। अब हेमू कालाणी जगह-जगह विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करता, होली जलाकर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग हेतु सामान्य जन को प्रेरित करता। काल चक्र गतिशील था। 8 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का ऐलान कर अंग्रेजों के विरुद्ध देशव्यापी संघर्ष छेड़ा। देश भर में जगह-जगह अंग्रेजों के विरुद्ध जनता उठ खड़ी हुई। सिंध भी ललकार कर खड़ा हुआ। पुलिस थानों, चौकियों, चौराहों पर विरोध प्रदर्शन होने लगे। हेमू इन गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगा। वह सिंध में लोकप्रिय हो घर-घर पहचाना जाने लगा। अक्टूबर, 1942 में हेमू को जानकारी मिली कि क्रेटा में आंदोलनकारियों को दबाने एवं संहार के लिए सक्खर से एक फौजी दस्ता तमाम घातक हथियारों को लेकर ट्रेन से जाने वाला है। तब हेमू ने साथियों के साथ योजना बना रात के समय पुल के पास रेल ट्रैक की फिश प्लेटें उखाड़ना शुरू किया। रात्रि के शांत वातावरण में हथौड़े की आवाज से ड्यूटी पर तैनात सिपाही मुस्तैद हो गए और पकड़ने को दौड़े। हेमू ने अपने दोनों साथियों को भगा दिया और स्वयं डटे रहे, फलत- पकड़े गए। सिपाहियों द्वारा असहनीय शारीरिक दंड दिया गया। साथियों का नाम-पता जानने के लिए निर्मम यातनाएं दी गयीं। लेकिन हेमू ने यही कहा कि मेरे केवल दो साथी थे यह एक रिंच और दूसरा हथोड़ा। मार्शल लॉ कोर्ट ने देशद्रोह के अपराध में हेमू को आजन्म कारावास दिया। आदेश की प्रति सिंध के हैदराबाद सेना मुख्यालय के अधिकारी कर्नल रिचर्डसन के पास अनुमोदन हेतु प्रेषित की गई। कर्नल आदेश प्रति पढ़कर आग बबूला हो गया और हेमू कालानी को अंग्रेजी सत्ता का खतरनाक शत्रु करार देते हुए आजीवन सजा को फांसी की सजा में बदल दिया। यह जानकारी बाहर आते ही सिंध उबल पड़ा। गणमान्य व्यक्तियों के एक समूह ने वायसराय को पत्र लिखकर फांसी की सजा को आजन्म कारावास में बदलने की प्रार्थना की। लेकिन वायसराय ने शर्त रखी कि हेमू अपने दोनों साथियों के नाम बता दे। लेकिन हेमू ने शर्त अस्वीकार कर बलिदान का पथ चुना। अंततः 21 जनवरी, 1943 को 19 वर्ष की अल्प आयु में प्रातः काल 7.55 बजे हेमू कालाणी को सक्खर की जेल में फांसी दे दी गई। देश अपने उस किशोर बलिदानी को भूला नहीं। 18 अक्टूबर, 1983 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने माता जेठी बाई की उपस्थिति में हेमू कालाणी पर 50 पैसे का डाक टिकट जारी किया। देश के तमाम शहरों यथा इंदौर, जयपुर, राजनांदगांव, जोधपुर, अजमेर, उल्हासनगर आदि में चौराहों के नाम हेमू कालाणी चौक रखे गए। फैजाबाद में एक पार्क का नाम रख हेमू कालाणी की 15 फीट ऊंची प्रस्तर प्रतिमा स्थापित की गई। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के मुख्य चौराहे कचहरी चौक में प्रतिमा स्थापित कर वार्ड का नाम हेमू कालाणी वार्ड रखा गया। तो दिल्ली में एक विद्यालय का नाम शहीद हेमू कालाणी सर्वोदय बाल विद्यालय रख श्रद्धांजलि अर्पित की गई। स्वाधीनता के युद्ध का यह किशोर नायक करोड़ों भारतीयों के दिलों में हमेशा जीवित जाग्रत रहेगा और देश के लिए सर्वोच्च बलिदान का भाव दिलों में भरता रहेगा। लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं। **बांदा (उ.प्र.) प्रमोद दीक्षित मलय 79 / 18ग शास्त्री नगर, अतर्रा - 210201ग जिला- बाँदाग उत्तर प्रदेश मो. 09452085234**

औपचारिकता भर रह गए हैं सड़क सुरक्षा सप्ताह आयोजन?

2026 के पहले सप्ताह से ही लोग सड़क हादसों में मारे जा रहें है। प्रतिवर्ष डेढ लाख लोग सड़क हादसों में मारे जाते है।नववर्ष देश में हर रोज इतने भीषण हादसे हो रहे है कि पूरे के पूरे परिवार मौत की नीद सो रहे हैं।कोहरे के कारण हजारों सड़क हादसे हो रहे है प्रतिदिन लोग मारे जा रहे है।सड़क सुरक्षा सप्ताह आयोजन औपचारिकता भर रह गए हैं बेशक प्रतिवर्ष की तरह 11 जनवरी से 17 जनवरी 2026 तक पूरे भारतवर्ष में सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया गया ।2026 में मनाए जा रहे सड़क सुरक्षा सप्ताह का थीम सीख से सुरक्षा,तकनीक से परिवर्तन रखा गया था। मानव जीवन अनमोल है।देश के नागरिको को यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए ताकि सड़क हादसों पर रोक लग सके। प्रतिवर्ष सड़क सुरक्षा हेतू करोडों रुपया बहाया जाता है मगर नतीजा वही ढाक के तीन पात ही निकलता है अगर सही तरीके से पैसा खर्चा किया जाए तो इन हादसो पर विराम लग सकता है मगर ऐसा नहीं हो रहा है। हर वर्ष लाखों लोग मारे जा रहे है।यातायात के नियमों का पालन न करने पर ही इन हादसों में निरंतर वृद्धि हो रही है। क्योकि प्रशासन द्वारा लोगों को इन सात दिनों में यातायात नियमों के बारे में बताया जाता है फिर पूरा वर्ष लोग अपनी मनमानी करते है और यातायात नियमों का उल्लंघन करते है और मौत के मुंह में समाते जा रहे है।लापरवाही से सड़कें रक्तरंजित हो रही है।चिराग बूझ रहें हैं।बच्चे अनाथ हो रहे हैं। आज युवा लापरवाही के कारण जान गंवा रहे है।युवा देश के कर्णधार है उसे देश का भविष्य है।प्रतिवर्ष लाखों युवा हादसों में बेमौत मारे जा रहे है।इकलौते चिराग अस्त हो रहे है।कोखें उजड़ रही है।माताओं व बहनों का सिंदूर मिट रहर हैं।बच्चे अनाथ हो रहे है।युवाओं को जागरुक करना होगा क्योकि युवा ही विकराल हो रही सड़क हादसों की समस्या को रोक सकते है। सड़क सुरक्षा सप्ताह पर लाखों रुपया बहाया जाता है मगर फिर भी सुधार नहीं होता।जब तक लोग यातायात के नियमों का उल्लंघन करते रहेंगे तब तक इन हादसों में लोग बेमौत मरतें रहेंगें। प्रतिदिन हो रही दुर्घटनाओं में हजारों लोग अपंग हो गए जो ताउम्र हादसों का दंश झेलते रहेंगें। देश में हर चार मिनट में एक व्यक्ति सड़क हादसे में मारा जाता है। प्रतिदिन देश की सडकें रक्तरंजित हो रही है नौजवानों से लेकर बुजुर्ग काल का ग्रास बन रहे हैं। आंकडें बताते है कि सड़क दुर्घटनाओं में भारत अन्य देशों से शीर्ष पर हैं। शराब पीकर वाहन चलाना तथा चलते वाहनों में मोबाइल का प्रयोग ही हादसों का मुख्य कारण माना जा रहा है। इसके कारण ही लाखो लोग सड़क हादसों में मौत का शिकार हुए।2026 में भी सडक हादसे थमने का नाम नहीं ले रहे हैं तथा प्रतिदिन दुर्घटनाओं का आंकड़ा बढता ही जा रहा है इसे सरकारों की लापरवाही की संज्ञा देना गलत नहीं होगा। ज्यादातर सड़क हादसे सर्दियों में होते है। लापरवाही के कारण हजारों सड़क हादसे हो रहे है सडक हादसे अभिशाप बनते जा रहे हैं। धुंध के कारण आपसी टक्कर में दुर्घटनाएं होती हैं। देश के प्रत्येक राज्यों में हादसों की दर बढती जा रही है दुर्घटना के बाद मुआवजे की राशि बांटने में व समाचार पत्रों में सुखियों में रहने में प्रशासन व नेता लोग आगे रहते हैं नेताओं द्वारा घड़ियाली आंसू बहाए जातें है।सड़क हादसों को रोकने के लिए एक नीति बनानी होगी।जागरुकता अभियान चलाने होगें।देश की सड़को पर लाशों के चिथड़े बिखर रहे हैं। पंजाब, दिल्ली व उत्तरप्रदेश व हिमाचल प्रदेश में धूंध के कारण दर्जनों हादसों में सैकड़ों लोग मारे जा रहे हैं। मगर राज्यों की सरकारों को इससे कोई सरोकार नहीं है। देश के प्रत्येक राज्यों में हादसों की दर बढती जा रही है दुर्घटना के बाद मुआवजे की राशि बांटने में व समाचार पत्रों में सुखियों में रहने में प्रशासन व नेता लोग आगे रहते हैं नेताओं द्वारा घड़ियाली आंसू बहाए जातें है।सड़क हादसों को रोकने के लिए एक नीति बनानी होगी।जागरुकता अभियान चलाने होगें। सरकारों को सोचना चाहिए।आज करोडों के हिसाब से वाहन पंजीकृत है मगर सही ढंग से वाहन चलाने वालो की संख्या कम है क्योकि आधे से ज्यादा लोगों को यातायात के नियमों का ज्ञान तक नहीं होता।पुलिस प्रशासन चालान काटकर अपना कर्तव्य निभा रहे है मगर चालान इसका हल नहीं है इसका स्थायी समाधान ढूंढना होगा। बिना हैलमैट के नाबालिग से लेकर अधेड़ उम्र के लोग वाहनो को हवा में चलाते है और दुर्घटनाओं का शिकार हो रहे हैं। जानबूझकर व नशे की हालत में दुर्घटना करने वाले चालकों के लाईसैस रदद करने चाहिए। ज्यादातर हादसे में नाबालिग चालक ही मारे जाते हैं। प्रशासन की लापरवाही के कारण भी इसमें साफ झलकती है आज ज्यादातर युवा व लोग शराब पीकर व अन्य प्रकार का नशा करके वाहन चलाते है नतीजन खुद ही मौत को दावत देते हैं भले ही पुलिस यन्त्रों के माध्यम से शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर शिकंजा कस रही है मगर फिर भी लोग नियमों का उल्लंघन करने से बाज नहीं आ रहे हैं। राज्यों की सरकारों द्वारा पुलिस को दी गई हाईवे पैट्रोलिंग की गाड़ियां भी यातायात को कम करने में नाकाम साबित हो रही हैं।बढती सड़क दुर्घटनाओं के अनेक कारण है सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि 80 प्रतिशत हादसे मानवीय लापरवाही के कारण होते हैं।लापरवाह लोग सीट बैल्ट तक नहीं लगाते और तेज रफ्तार में वाहन चलाते हैं।देश में सड़क हादसों में स्कूली बच्चों के मारे जाने के हादसे भी समय-समय पर होते रहते हैं मगर कुछ दिन चैक रखा जाता है फिर वही परिपाटी चलती रहती है।जबकि होना तो यह चाहिए कि इन लापरवाह चालको को सजा देनी चाहिए ताकि मासूम बेमोत न मारे जा सके। अक्सर देखा गया है कि वाहन चालकों के पास प्राथमिक चिकित्सा बाकस तक नहीं होतें ताकि आपातकालिन स्थिती में प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा सके । प्रत्येक साल नवरात्रों में श्रध्दालू मंदिरों में ट्रको में जाते है और गाड़ियां दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है तथा मारे जाते हैं।ओवरलोडिग से भी ज्यादातर हादसे होते हैं।सरकार को इन हादसों से सबक लेना चाहिए और व्यवस्था की खामियों को दूर करना चाहिए। सरकारों को अपना दायित्व निभाना चाहिए ताकि सड़क दादसों पर पूरी तरह रोक लग सके। सडक हादसे अभिशाप बनते जा रहे हैं।बेलगाम हो रहे यातायात पर लगाम लगाना सरकार व प्रशासन का कर्तव्य है लोगों को भी इसमें सहयोग करना होगा तभी इस समस्या का स्थायी हल हो सकता है यदि लोग सही तरीके से यातायात नियमों का पालन करते है तो सड़को पर हो रहे मौत के तांडव को रोका जा सकता हैकन्द्र सरकार को इस पर गौर करना होगा तथा देश में बढ रही सड़क दुर्घटनाओ पर रोक के लिए कारगर कदम उठाने होगें नही तो देश के प्रत्येक महानगरों व शहरों से लेकर गांवों तक हर रोज लाशों बिछती रहेगी लोग मरते रहेंगें। दुर्घटनाओं का कहर बरपता रहेगा। यदि सरकारे ऐसे ही सोती रहेगी तो देश की सड़के खून से लाल होती रहेगी।मावन जीवन को बचाना होगा क्योकि मानव जीवन दुर्लभ है। तभी सड़क सुरक्षा सप्ताह की सार्थकता होगी। **नरेन्द्र भारती वरिष्ठ पत्रकार**

फ्लिपकार्ट ने विश्वास, जवाबदेही और प्लेटफॉर्म की इंटीग्रिटी बढ़ाने के लिए मार्केटप्लेस गवर्नेंस फ्रेमवर्क को मजबूत किया

भारत का होमग्रोन ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस, फ्लिपकार्ट अपने प्लेटफॉर्म पर निष्पक्षता, प्रामाणिकता और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए अपने कंप्लायंस गवर्नेंस फ्रेमवर्क में लगातार निवेश कर रहा है। संगठन में ये सिस्टम स्थिर मानकों, आंतरिक कंट्रोल और ऑडिट-रेडी प्रक्रियाओं के साथ काम करते हैं। यह प्रोएक्टिव और विकसित दृष्टिकोण फ्लिपकार्ट मार्केटप्लेस की गवर्नेंस के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिस पर 1.4 मिलियन से अधिक सैलर्स की लाखों लिस्टिंग्स हैं। बेहतरीन टेक्नोलॉजी, संरचनाबद्ध मानवीय निगरानी और औपचारिक कंप्लायंस नीतियों की मदद से फ्लिपकार्ट एक विश्वसनीय, सुसंचालित वातावरण सुनिश्चित करता है, ताकि व्यवसाय लगातार विकास कर सकें और ग्राहकों को सुरक्षि और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त हो सकें। फ्लिपकार्ट एक मानक, रिस्क-आधारित ऑनबोर्डिंग एवं मॉनिटरिंग सिस्टम द्वारा सुरक्षा की पहली दीवार पेश करता है, जो अनुपालन न करने वाले और जाली सैलर्स को प्लेटफॉर्म पर प्रवेश करने और संचालन करने से रोकती है।

सैलर्स का मजबूत पुनरीक्षण- फ्लिपकार्ट पर प्रवेश करने वाले नए सैलर्स का रिस्क-बेस्ड मॉडल द्वारा पुनरीक्षण किया जाता है, जो दस्तावेज जमा करने के मुकाबले काफी व्यापक है। इस ऑनबोर्डिंग सिस्टम में जीएसटी और पैन नंबर की जाँच की जाती है। सैलर के डिवाईस, पता और पिनकोड की पुष्टि की जाती है। आंतरिक डेटा मॉडल द्वारा पहले रहे किसी फ्रॉड पैटर्न की जाँच की जाती है। सभी जीएसटी विवरण का टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन किया जाता है, ताकि क्रेडेंशियल्स का दुरुपयोग न हो सके। इन जाँचों के साथ एक फ्रॉड लिंकेज एनालिसिस भी किया जाता है, ताकि पहले उल्लंघन कर चुके सैलर्स प्लेटफॉर्म पर दोबारा प्रवेश न कर सकें। फ्लिपकार्ट के मॉनिटरिंग आर्किटेक्चरए आई आधारित स्केल और मानव सुपरविज़न के साथ ऑडिट-योग्य भी है, जो दस्तावेजबद्ध समीक्षा प्रक्रियाओं, ऑडिट ट्रेल और एस्केलेशन प्रोटोकॉल के साथ ऑटोमेशन सुनिश्चित करता है। रियल-टाईम इम्फ्रिंजमेंट स्कैनिंग सिस्टम डिटेक्शन मॉडल की मदद से उत्पादों के टैक्स्ट और लोगो इम्फ्रिंजमेंट को पहचानता है। इसके बाद मैन्युअल परीक्षण किया जाता है और अगर इम्फ्रिंजमेंट की पुष्टि हो जाए, तो उत्पाद को प्लेटफॉर्म से हटा दिया जाता है। इसके अलावा, मार्केटप्लेस की क्वालिटी कंट्रोल टीमें संबंधित रैगुलेटरी अनुपालन के लिए प्रतिमाह लाखों लिस्टिंग्स की स्कैनिंग करती हैं। टेक्नोलॉजी पर आधारित उपायों के अलावा, फ्लिपकार्ट सैलर की जमीनी जाँच भी करता है, तथा पते की पुष्टि जियोटैगिंग के माध्यम से की जाती है। उन सैलर्स का सरप्राईज़ ऑडिट भी किया जाता है, जिनके लिए ज्यादा निगरानी की जरूरत होती है। संगठन के परिवेश में निगरानी को मजबूत बनाने के लिए फ्लिपकार्ट ने एक आंतरिक कर्मचारी अभियान शुरू किया है, जिसके माध्यम से कर्मचारी सैलर या कंज्यूमर शोषण पैटर्न की पहचान करके उसकी सूचना दे सकते हैं। इनमें जाली लिस्टिंग से लेकर कई एकाउंट द्वारा दुरुपयोग, रिटर्न में हेर-फेर और प्रमोशनल फ्रॉड शामिल हैं।

मेकमायट्रिप ने स्टे और बस बुकिंग में महिलाओं के लिए सुरक्षा और भरोसे से जुड़े संकेत पेश किए

गुरुग्राम। भारत की अग्रणी ऑनलाइन ट्रैवल कंपनी मेकमायट्रिप तकनीकी और यूज़र द्वारा साझा की गई जानकारियों का उपयोग करते हुए महिला यात्रियों को स्टे और इंटरसिटी बस बुकिंग के दौरान अधिक भरोसे के साथ निर्णय लेने में मदद कर रही है। यह पहल प्लेटफ़ॉर्म पर सामने आए यूज़र व्यवहार के ट्रेंड्स पर आधारित है, जिनसे साफ़ होता है कि महिला यात्री बुकिंग से पहले विकल्पों की बारीकी से जांच-परख करती हैं। इसमें रिव्यू पर अधिक क्लिक करना यानी रिव्यूज़ को ध्यान से पढ़ना, मैप्स और स्ट्रीट व्यू पर ज़्यादा समय देना और बुकिंग कन्फ़र्म करने से पहले अन्य मेहमानों द्वारा अपलोड की गई तस्वीरों को बारीकी से देखना शामिल है। यही रुझान बुकिंग के तरीक़ों में भी नज़र आते हैं। महिलाएँ पुरुषों की तुलना में कम से कम 15 दिन पहले 50 प्रतिशत अधिक स्टे बुक कर रही हैं और प्रीमियम व ब्रांडेड प्रॉपर्टीज़ के प्रति उनकी पसंद 16 प्रतिशत अधिक देखी गई है। जैसे-जैसे महिला यात्री टियर-1 से टियर-3 शहरों की ओर बढ़ती हैं, यह पसंद और भी स्पष्ट हो जाती है, जहाँ ब्रांडेड स्टे उनके लिए भरोसे का मानक बन जाते हैं। इंटरसिटी बस रूट्स पर अकेले यात्रा करने वाली महिलाएं आमतौर पर ऐसी सीटिंग व्यवस्था को चुनना पसंद करती हैं, जिसमें उन्हें अन्य महिलाओं के पास बैठने का विकल्प मिले, न कि मिश्रित सीटिंग में। जब सिस्टम को यह पता चलता है कि कोई महिला स्टे की योजना बना रही है, तो सुरक्षा और भरोसे से जुड़े अहम बिंदु उभरकर सामने आते हैं या हाईलाइट किए जाते हैं। एआई-आधारित सारांश स्टे की खोज प्रक्रिया के दौरान स्टाफ के व्यवहार और लोकेशन की सुरक्षा जैसे संकेतों को सामने लाते हैं। इसके साथ ही सीसीटीवी, डोर आई, डोर चेन और फुल-लेंथ मिरर जैसी महिला-केंद्रित सुविधाओं के बारे में जानकारी भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखाए जाते हैं, ताकि यात्री होटल/प्रॉपर्टी में सुरक्षा के पुख्ता इंतज़ामों को आसानी से समझ सकें। यात्री निर्णय लेने से पहले प्लेटफ़ॉर्म पर पहले से उपलब्ध स्ट्रीट व्यू फ़ीचर के ज़रिये आसपास की सड़कों और प्रॉपर्टी तक पहुँच के रास्ते को भी देख सकती हैं। इंटरसिटी बस यात्राओं में भी यही तरीका अपनाया गया है। एआई केवल महिला यात्रियों द्वारा की गई यात्राओं से जुड़े रिव्यू की पहचान करता है और उन्हें समय की पाबंदी, सुरक्षा और साफ़-सफाई जैसे प्रमुख सरोकारों के आधार पर फ़िल्टर करता है। प्रत्येक विशेषता को एक सेंटिमेंट टैग दिया जाता है, जिससे महिलाएँ फीडबैक का तेज़ी से आकलन कर पाती हैं और अधिक भरोसे के साथ निर्णय ले सकती हैं। जब कोई महिला डबल बर्थ के एक हिस्से की बुकिंग करती है, तो उससे सटी हुई बर्थ अपने आप केवल महिलाओं के लिए सीमित कर दी जाती है, ताकि अजनबी पुरुषों के बगल में बैठने की असहजता से बचा जा सके। यह व्यवस्था खास तौर पर रात की या लंबी दूरी की यात्राओं के दौरान निश्चिंतता की एक अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करती है। मेकमायट्रिप के को-फाउंडर और ग्रुप सीईओ राजेश मागो ने कहा, ÷महिलाएं अपनी यात्रा की योजना बनाते समय पहले से ही बेहद सतर्क रहती हैं। प्लेटफॉर्म पर दिख रहे बुकिंग पैटर्न से पता चलता है कि वे स्टे और यात्रा मार्ग-दोनों का मूल्यांकन कितनी सोच-समझकर करती हैं। हम अपने विशाल डेटा भंडार और एआई की शक्ति से इस योजना प्रक्रिया को उनके लिए आसान बनाने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि वे पूरी जानकारी के आधार पर निर्णय ले सकें।

दु-ख और सु-ख जीवन का खेल पाकर विचलित ना होवे

मनुष्य का जीवन निरंतर परिवर्तित होती परिस्थितियों का संगम है। कभी यह अनुकूल होकर सुख की वर्षा करता है, तो कभी प्रतिकूल बनकर दुख की आँधी खड़ी कर देता है। इन दोनों अवस्थाओं में मनुष्य की मनोवृत्ति प्रायः भिन्न रहती है। विपत्ति के क्षणों में वह भयभीत होकर परमात्मा की शरण में भागता है, किन्तु जब सब कुछ सुखद और सरल हो, तब उसका चित्त ईश्वर को भूलकर अहंकार और भोग-विलास में डूब जाता है। मानव-स्वभाव ऐसा है कि जब विपत्ति आती है, तो उसे किसी उच्च शक्ति का स्मरण हो जाता है। रोग, शोक, क्लेश या अभाव की स्थिति में उसकी वाणी से अनायास ही ÷हे भगवान!÷ निकल पड़ता है। परंतु जब जीवन ऐश्वर्य, स्वास्थ्य और समृद्धि से भरा हो, तो वही मनुष्य भूल जाता है कि यह सब ईश्वर की कृपा से ही संभव है। भगवद्गीता (7.16) में श्रीकृष्ण कहते हैं - चार प्रकार के भक्त मुझे भजते हैं - दुखी, जिज्ञासु, धन की इच्छा रखने वाले और ज्ञानी। इनमें ज्ञानी सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि वह सुख-दुख की परवाह किए बिना निरंतर परमात्मा का स्मरण करता है। यदि हम सुख के क्षणों में भी ईश्वर को न भूलें, तो दुख हमें कभी डिगा नहीं पाएगा। सुख में सुमिरन करने से मनुष्य अहंकार से बचता है। वह यह समझता है कि यह सुख भी ईश्वर की कृपा है। उसका चित्त स्थिर रहता है, और सांसारिक आकर्षणों में डूबने के बजाय आत्मिक शांति प्राप्त करता है। सनातन धर्म की परंपरा में जप, तप, भजन और स्मरण को जीवन का अनिवार्य अंग माना गया है। वेदों में कहा गया है - ÷सत्यं वद, धर्मं चर÷ अर्थात सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो और ईश्वर-स्मरण में निरंतर रत रहो। तैत्तिरीयोपनिषद् में ÷आनन्दो ब्रह्मेति÷ कहा गया है - ब्रह्म ही आनंदस्वरूप है। उसका स्मरण करने वाला दुख से परे हो जाता है। आज के युग में भौतिकता ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर